श्रमण १९९६ १० (फोल्डर नं. ०२५०२८)

सम्पादक - डॉ. अशोक कुमार सिंह,

डॉ. शिवप्रसाद, डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

द्वन्द्व और द्वन्द्व निवारण (जैन दर्शन के विशेष प्रसङ्ग में) – डॉ. सुरेन्द्र वर्मा ---------- १

अनेकान्तवाद और उसकी व्यवहारिकता – डॉ. विजय कुमार ---------- १४

स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग में पुनरावृत्ति की समस्या – डॉ. अशोक कुमार सिंह---------- ३६

तित्थोगाली (तिर्थोद्गालिक) प्रकीर्णक की गाथा संख्या का निर्धारण – अतुल कुमार प्रसाद सिंह ----- ५३

पिप्पलगच्छ का इतिहास – डॉ. शिवप्रसाद ---------- ६५

Spiritual Practice of Lord Mahavira – Dr. Shiv Muni ---------- 83

Relevance of Non-Violence in Modern Life – Dulichand Jain ---------- 101

Book Review – Dr. S. P. Pandey---------- 110

पुस्तक समीक्षा ----------११२

जैन जगत् ---------- ११५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org